राज्य अध्याय 44

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हांथों में सौंपे।

2	**साझा करें** (20 मिनट) ***[शांत समय]*** **यहेजकेल 36,37,38 और 39**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यहेजकेल 36,37,38 और 39) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट) ***[रोमियों में प्रमुख वचन]*** **(17) रोमियों 12:17**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(17) रोमियों 12:17-18. बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के लिये भली हैं, उनकी चिन्ता किया करों। जहाँ तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***[रोमियों की पत्री]*** **रोमियों 14:1-23**

परिचय। एक साथ मिलकर **रोमियों 14:1-23** का अध्ययन करने के लिये बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों वाली विधि का प्रयोग करें।

रोमियों 14:1 से 15:6 उन मसीहियों के सम्बन्ध मसीही की जिम्मेदारी को सिखाता है जिनका विश्वास (या यों कहें: आस्था) कमज़ोर या मज़बूत है। इस संदर्भ में, यह उद्धार के अर्थ में उनका यीशु मसीह के प्रति विश्वास नही होता, परन्तु इस विषय में उनकी आस्था कि वे मसीही के रूप में क्या कर सकते हैं या नहीं कर सकते हैं! उनका व्यक्तिपरक विश्वास विवादित (विवादास्पद) मामलों के विषय में उनके व्यक्तिगत विचारों, आस्था या प्रतीतियों को निर्धारित करता है।

परन्तु ध्यान दें, एक मसीही जिसका विवादित (विवादास्पद) चीजों के मामले में "एक मज़बूत विश्वास" है, उसका उसी समय में अन्य आत्मिक मामलों में "कमजोर विश्वास" हो सकता है, जैसे कि मसीही सत्य का ज्ञान, प्रार्थना, विश्वासयोग्यता या मसीही सेवकाई में उत्साहित होना। इसी प्रकार, एक मसीही जिसका विवादित चीजों के मामले में "एक कमज़ोर विश्वास" है, उसी समय में उसका अन्य आत्मिक मामलों में "एक मज़बूत विश्वास" हो सकता है।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

आइये एक साथ मिलकर रोमियों 14:1-23 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छूआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

14:1-2

खोज 1. **मसीहियों के बीच विवादित (विवादास्पद) मामले।**

(1) गैर-विवादित मामले।

पौलुस के पत्रियों में, वह विभिन्न स्थितियों में मसीहियों को लिखता है। उदाहरण के लिए:

- कुरिन्थ वासियों को लिखे अपने पत्र में, वह मसीहियों के न्यायालय में जाने की समस्या, मसीहियों द्वारा उनके बीच में अवज्ञाकारी मसीहियों को सहने, विवाह और तलाक आदि जैसी समस्याओं से निपटता है।
- गलातिय वासियों को लिखे अपने पत्र में, वह यहूदियों की झूठी शिक्षा से निपटता है कि व्यवस्था के कार्यों को करने के माध्यम से मसीही उद्धार प् सकते हैं।
- कुलुस्सिय वासियों को लिखे अपने पत्र में, वह आत्मज्ञान की झूठी शिक्षा से निपटता है कि मानव आत्मा को मानव शरीर से मुक्त किया जाना आवश्यक था, विशेष रूप से कड़ी तपस्या के माध्यम से।

इन सभी मामलों के विषय में बाइबल में स्पष्ट शिक्षा है। ये विवादित मामले नहीं हैं!

(2) विवादित (विवादास्पद) मामले।

हालाँकि, मसीहियों के बीच विवादित मामले हैं। रोमियों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस विवादित मामलों के मुद्दे से निपटता है। "विवादित मामले" ऐसे मामले हैं जिनके विषय में बाइबल में थोड़ी या कोई शिक्षा नहीं है। इसके बावजूद, ऐसे मसीही हैं जो इन मामलों के विषय में मज़बूत राय, आस्था या विश्वास रखते हैं और इसके परिणामस्वरूप उनके तर्क या विवाद होते हैं। प्रेरित ने कहा, "विवादित मामलों पर न्याय किए बिना उसे स्वीकार करो जिसका विश्वास कमज़ोर है" (यूनानी: मे आई आक्रिसे लोगिस्मोन)।

रोम में मसीही अलग-अलग पृष्ठभूमि से आए और उन्होंने कुछ मामलों के विषय में अलग-अलग राय रखी। उनकी राय में मतभेद यहाँ तक पतित हुए कि मज़बूत मसीही कमज़ोर मसीहियों के दृढ़ विश्वास को कम समझते थे और कमज़ोर मसीही मज़बूत के दृढ़ विश्वास को आँकते थे।

राय ऐसे विचार होते हैं जिन्हें संभावना के रूप में माना जाता है, जबकि *आस्था* दृढ़ विश्वास होता है। परन्तु रोम में, कुछ लोग अपनी राय को दृढ़ विश्वास मानते थे! रोम के मसीही इस विषय में अलग-अलग राय रखते थे कि वे क्या खा सकते हैं या नहीं (शुद्ध और अशुद्ध भोजन) और इसके विषय में कि कौनसा दिन एक धार्मिक त्योहार है (एक सब्बत, एक उपवास दिन, एक फसह, आदि)। वे इस विषय में झगड़ा करते थे कि क्या एक मसीही सब कुछ खा सकता है या केवल सब्जियाँ (रोमियो 14:2)। और वे इस विषय में झगड़ा करते थे कि क्या मसीही को एक दिन को दूसरे दिन की तुलना में अधिक पवित्र मानना चाहिए या हर दिन को एक जैसा मानना चाहिए (रोमियों 14:5)।

इन विवादों की संभावित पृष्ठभूमि शायद पुराने नियम की *औपचारिक व्यवस्था* थी जिसके साथ वे मसीही जुड़े हुए थे, जो पहले यहूदी या यहूदी मत को अपनाए हुए थे। पुराने नियम में औपचारिक व्यवस्था ने परमेश्वर की उन आवश्यकताओं के विषय में बताया कि उसके लोग कैसे उससे संपर्क कर सकते हैं और उसकी उपासना कर सकते हैं। उसमें पवित्र व्यक्तियों (याजकों और लेवियों), पवित्र स्थानों (मिलाप का तम्बू और मंदिर), पवित्र समय (सब्त के दिन, धार्मिक पर्व) और पवित्र कार्यों (बलिदान, खतना, शुद्ध खाने, स्वयं को धोना, पहले-जन्मे, पहले फल, दशमांश, आदि) के विषय में नियम सम्मिलित थे। यहूदियों के धर्म शिक्षकों ने इन में 613 अन्य मानव निर्मित नियम जोड़े और सभी यहूदियों के लिए अपने नियमों को अनिवार्य बना दिया।

इस प्रकार, विशेष रूप से यहूदी और यहूदी मत को अपनाए हुओं ने, जो बाद में मसीही बन गए थे, अभी भी ऐसे नियमों को बहुत महत्वपूर्ण या अनिवार्य मानते थे। वे अभी तक यह नहीं समझ पाए थे कि अपने प्रथम आगमन पर यीशु मसीह ने औपचारिक व्यवस्था को बदल (इब्रानियों 7:12), पूरा (मत्ती 5:17), रद्द (कुलुस्सियों 2:14) और निरस्त (समाप्त) (इफिसियों 2:14-15) कर दिया था और यहूदी धर्म शिक्षकों के सभी मानव निर्मित नियमों को अस्वीकृत (मरकुस 7:1-13) कर दिया गया था! दूसरी ओर गैर-यहूदी जो मसीही बन गए थे, इन नियमों को महत्वपूर्ण या अनिवार्य नहीं मानते थे। इस प्रकार से व्यक्तिगत रायों के विषय में तर्क आए थे।

उनकी राय में मतभेद का मामला जटिल बन गया था, जब दोनों पक्षों के मसीही अपनी व्यक्तिगत राय को दृढ़ विश्वास के रूप में मानने लगे थे! विवादित मामलों पर राय अपने आप में गलत नहीं थी। परन्तु जब लोग अपनी व्यक्तिगत राय (या कलीसिया की परंपराओं) के माध्यम से परमेश्वर का वचन शक्तिहीन (यूनानी: आकुरु) (वर्तमान काल) (एनआईवी: अमान्य ठहराना) (मरकुस 7:13; गलातियों 3:17) करते हैं, अन्य मसीहियों पर अपनी व्यक्तिगत राय को लागू (प्रेरितों 15:1) करते हैं, इस प्रकार की राय रखते हुओं को कम समझते हैं या उनकी निंदा (रोमियों 14:3) करते हैं, तब दोनों ओर एक दूसरे को प्रेम में स्वीकार करने की आज्ञा का उल्लंघन होता है (रोमियों 14:1)!

(3) आज मसीहियों के बीच विवादित (विवादास्पद) मामले।

हमारे समय में, मसीही निम्नलिखित मामलों को विवादित मामला मान सकते हैं:

- क्या मसीहियों को पूरे वर्ष में सभी मसीही त्योहारों को मनाना चाहिए या उनमें से केवल कुछ को?
- क्या मसीहियों को एक विशेष तरीके से लोगों को बपतिस्मा देना चाहिए?
- क्या मसीहियों को हर सप्ताह या हर वर्ष केवल कुछ ही बार प्रभु भोज मनाना चाहिए?
- क्या मसीहियों को प्रभु के दिन में दो बार कलीसिया की सभाओं में भाग लेना चाहिए या हर दिन चर्च जाना चाहिए?
- क्या मसीहियों को केवल बाइबल में दिए भजन गाने चाहिए या वे नए आत्मिक गीत बना सकते हैं या गा सकते हैं?

- क्या मसीही आराधना सभा में विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों का उपयोग करें (भजन संहिता 150)?
- क्या मसीही अलग-अलग ढंग के संगीत बनायें, गायन के दौरान ताली बजाएँ, नाचें या सभा के दौरान शोर मचाएँ?
- क्या कलीसिया के अगुवों को अलग लिपिकीय वस्त्र पहनने चाहिए?
- क्या मसीहियों को विशेष प्रकार के कपड़े पहनने चाहिए जो उन्हें मसीहियों के रूप में अलग पहचान दें?
- क्या मसीही पुरुषों को छोटे बाल या दाढ़ी रखनी चाहिए?
- क्या मसीही महिलाओं को सिर पर शॉल या ओढ़नी लेनी चाहिए?
- क्या मसीही आभूषण पहनें, शराब पियें, नाचें, बिना जुए के भाग्य वाले (पासा फेंकने वाले) खेल खेलें, टेलीविजन देखें या फिल्में देखें, आदि।
- क्या कलीसिया की आधिकारिक सभाओं में महिलाएँ बात कर सकती हैं?
- क्या समलैंगिक अभिविन्यास वाले लोग कलीसिया की गतिविधियों में भाग ले सकते हैं?
- क्या नशा करनेवालों और वेश्याओं का कलीसिया की सभाओं में भाग लेने के लिए स्वागत है?
- क्या मसीहियों को राजनीति और समुदाय में भाग लेना चाहिए?
- क्या मसीहियों को पर्यावरण के मुद्दों जैसे पानी के संरक्षण और वैश्विक तापमान बढ़ौतरी के विषय में चिंतित होना चाहिए?
- क्या मसीहियों को इस बात की चिंता करनी चाहिए कि वे कितनी मछली पकड़ते हैं, माँस उद्योग के लिए वे कितने मवेशियों को पालते हैं, कारों के ईंधन या बीड़ी के तंबाकू के उत्पादन के लिए वे कितनी कृषि भूमि का उपयोग के लिए करते हैं?
- क्या मसीहियों को वर्षावनों, पक्की लकड़ी, पक्षियों, जानवरों, कीटों आदि को बचाने में सहायता करनी चाहिए।
- क्या मसीहियों को हथियार उद्योग को मंजूरी देनी चाहिए क्योंकि वह अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है?
- क्या प्रत्येक इंसान को बंदूक खरीदनी या रखनी चाहिए (यूएसए में दूसरा संशोधन) (मत्ती 26:52)?
- आदि।

मसीहियों को इन बातों के विषय में व्यक्तिगत आस्था रखने की आवश्यकता है! परन्तु मसीहियों को यह भी एहसास होना चाहिए कि अन्य मसीही इन चीजों के विषय में अलग-अलग आस्था रख सकते हैं!

14:3-4

खोज 2. **रवैया जो मसीहियों का विवादित मामलों के संबंध में होना चाहिए।**

पद 1 विशिष्ट मसीहियों को "विश्वास में कमज़ोर" कहता है। इस संदर्भ में, यहाँ इसका अर्थ यीशु मसीह के उद्धार के लिए उनका विश्वास नहीं है, बल्कि उनका यह विश्वास कि वे मसीही के रूप में क्या कर सकते हैं या नहीं कर सकते हैं! उनका व्यक्तिपरक विश्वास विवादित मामलों के संबन्ध में उनकी व्यक्तिगत राय, आस्था या विश्वास को निर्धारित करता है। ऐसे मसीही हैं जिनका व्यक्तिगत विश्वास उन्हें कुछ खाद्य पदार्थ खाने से मना करता है और कुछ ऐसे मसीही हैं जिनका व्यक्तिगत विश्वास उन्हें हर चीज खाने की अनुमति देता है।

"कमज़ोर" और "मज़बूत" वर्णनों द्वारा, किसी निंदा का अभिप्राय नहीं, परन्तु केवल अंतर करना है। पौलुस उस विश्वास को "कमज़ोर विश्वास" कहता है जो लोगों को कुछ चीजों को करने के लिए मना करता है, क्योंकि इस प्रकार का विश्वास उन

मसीहियों के आचरण से ठोकर और विनाश के लिए अतिसंवेदनशील है, जिनका विश्वास उन्हें वही चीजों को करने की अनुमति देता है।

(1) दृढ़ विश्वास वाले मसीही कमज़ोर विश्वास वाले मसीहियों पर न्याय पारित न करें।

रोमियों 14:1 कहता है, "जो विश्वास में निर्बल है, उसे अपनी संगति में ले लो, परन्तु उसी शंकाओं पर विवाद करने के लिए नहीं।" प्रेरित पौलुस के प्रबोधन का यह भाग दृढ़ विश्वास वाले मसीहियों के लिए है। वे कमज़ोर विश्वास वाले मसीहियों के विचारों या राय के विषय में कोई न्याय न बनायें। मज़बूत कमज़ोर लोगों के संदेहों या विभिन्न आस्थाओं दोषों के विषय में अलग-अलग बयान न दें। उदाहरण के लिए, वे उनके विश्वास के विषय में नकारात्मक बयान न दें कि वे क्या खाते हैं या पीते हैं या वे किन दिनों को अन्य दिनों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। वे ऐसे लोगों को नीचा या तुच्छ न समझें (रोमियों 14:3)।

(2) कमज़ोर विश्वास वाले मसीही मज़बूत विश्वास वाले लोगों की निंदा न करें।

रोमियों 14:3 कहता है, "और खानेवाला न-खाने वाले को तुच्छ न जाने, और न-खानेवाला खाने वाले पर दोष न लगाए।" प्रेरित पौलुस के प्रबोधन का यह भाग कमज़ोर विश्वास वाले मसीहियों के लिए है। वे उनसे अलग खाने वाले, या उनसे अलग कपडे पहनने वाले, या उनसे अलग गाने वाले मज़बूत विश्वास के मसीहियों का न्याय न करें या उनकी निंदा न करें। परमेश्वर ने मज़बूत विश्वास वाले मसीहियों को स्वीकार किया है और इसलिए कमज़ोर विश्वास वाले मसीही उनकी "दूसरे दर्जे के मसीही" या "कोई मसीही नहीं" होने के रूप में निंदा न करें! वे उन्हें "अवज्ञाकारी" या "अनात्मिक" मसीही न मानें। परमेश्वर ने मज़बूत मसीही को स्वीकार कर लिया है और कमज़ोर मसीही उसकी निंदा न करें जिसे परमेश्वर ने अनुमोदित किया है या उसे अस्वीकार न करें जिसे परमेश्वर ने स्वीकार किया है।

रोमियों 14:4 कहता है, "तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसका स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बन्ध रखता है।" कमज़ोर मसीहियों को प्रभु के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप न करने के लिए प्रेरित किया गया है जिसने मज़बूत मसीहियों को उनकी अधिक स्वतंत्रता की जीवन शैली के साथ स्वीकार किया है।

एक मज़बूत विश्वास वाले मसीहियों द्वारा स्वतंत्रता के अभ्यास के संबंध में कमज़ोर मसीहियों की प्रवृत्ति में वह "सांसारिकता" या "धर्मत्याग", यहाँ तक कि विश्वास से "हटना" भी माना गया। कमज़ोर मसीही ने सोचा कि मज़बूत मसीही की जीवन-शैली मसीह की अस्वीकृति के अधीन थी। परन्तु पौलुस का कहना है कि कलीसिया के प्रभु ने घर के नियमों और मानदंडों को निर्धारित किया था और घर के रहने वालों को अपने स्वयं के मानदंडों और नियमों के साथ एक दूसरे का न्याय करने की अनुमति नहीं थी। वह कमज़ोर मसीहियों को बोलता है कि वे मज़बूत मसीहियों के अपने कठोर निर्णय को रद्द कर दें। प्रभु मज़बूत मसीहियों की जीवन शैली को मंजूरी देता है और यह देखता है कि मज़बूत मसीही अपने विश्वास में खड़े रहें।

कदम 3. प्रश्न।	**व्याख्या**
ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं? आइये रोमियों 14:1-23 में पायी जाने वाली सच्चाइयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते। ***लिखें:*** अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें। *साझा करें:* (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना	

प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

14:5-9

प्रश्न 1. **मसीहियों को विवादित (विवादास्पद) मामलों के विषय में अपनी व्यक्तिगत राय या आस्था को कैसे मानना चाहिए?**

ध्यान दें।

(1) विवादित (विवादास्पद) मामलों के विषय में मसीहियों को अपने स्वयं के मन में पूरी रीति से आश्वस्त होना चाहिए (रोमियों 14:5)

दो चरम सीमाएं हैं और दोनों से बचना चाहिए।

एक ओर, ऐसी कालीसियाएँ हैं जो अनुरूपता की माँग करती हैं। जब कलीसिया के अगुवे या सदस्य विवादित मामलों में अनुरूपता की माँग करते हैं, तो परमेश्वर का लक्ष्य चूक जाता है, अर्थात, एक दूसरे से प्रेम करना और विविधता को स्वीकार करना! प्रेरित पौलुस मसीहियों को कलीसिया में विविधता को स्वीकार करने और विवादित मामलों (मांस खाने और शराब पीने जैसे) के विषय में एक दूसरे की प्रतिबद्धता को सहन करने के लिए प्रेरित करता है, वचन 23।

दूसरी ओर, ऐसे मसीही हैं जिनके पास व्यक्तिगत आस्था की कमी है। प्रेरित पौलुस कहता है कि प्रत्येक मसीही को विभिन्न विवादित मामलों के विषय में "अपने मन में पूरी रीति से आश्वस्त होना चाहिए" (यूनानी: तो इदिओ नोए प्लेरोफोरेओ) (आदेश, वर्तमान काल) क्योंकि केवल यही वह तरीका है जिससे वह इन चीजों को प्रभु के लिए सचेत रूप से कर सकता है या नहीं कर सकता है। प्रत्येक मसीही को न केवल इन मामलों में एक व्यक्तिगत राय या आस्था रखने का अधिकार है, परन्तु परमेश्वर की यह माँग हैं कि प्रत्येक मसीही को अपनी आस्थाओं के विषय में स्पष्ट होना चाहिए और अपनी आस्थाओं के अनुसार जीना चाहिए।

(2) मसीहियों को अपना पूरा आचरण सब कुछ परमेश्वर हेतु करने के रूप में निर्धारित करना चाहिए (रोमियों 14:6)।

स्वतंत्रता के क्षेत्र में (जहाँ मसीही चुन सकते हैं और निर्णय ले सकते हैं) एक मसीही का आचरण अधर्मी नहीं है। एक मसीही जो कुछ भी करता है या करने से मना करता है वह "प्रभु के प्रति" है। वह इस चेतना के प्रति कभी भी निराश नहीं होता कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है (1 कुरिन्थियों 10:31; कुलुस्सियों 3:17,23)। वह आंतरिक रवैया जिसके साथ किसी विशेष आस्था का अभ्यास किया जाता है या अभ्यास करने से रूका जाता है, जो परमेश्वर की दृष्टि में महत्वपूर्ण है।

दोनों मज़बूत और कमज़ोर मसीहियों की व्यक्तिगत आस्था और परिणामस्वरूप आचरण, परमेश्वर को स्वीकार्य होने का प्रमाण यह है कि दोनों मज़बूत और कमज़ोर मसीही परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं (मत्ती 15:36; प्रेरितों 27:35; 1 कुरिन्थियों 10:30), चाहे वे चीजें असीमित या सीमित तरीके से करें। "क्योंकि परमेश्वर की बनाई हर चीज अच्छी है और कोई भी अस्वीकार नहीं होनी चाहिए यदि वह धन्यवाद के साथ प्राप्त हुई है, क्योंकि वह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना से पवित्र हुई है"! बनाई गई चीजें परमेश्वर को स्वीकार्य होती हैं, जब:

- वे बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के अनुसार उपयोग की जाती हैं (1 तीमुथियुस 4:5)

• वे व्यक्तिगत आस्था के साथ उपयोग की जाती हैं (रोमियों 14:5)

• मसीही ने उनके विषय में प्रार्थना की है (1 तीमुथियुस 4:4; प्रकाशितवाक्य 3:6)।

परमेश्वर का धन्यवाद करने से, मसीही परमेश्वर के प्रति अपना आभार और मसीह के प्रति समर्पण की भावना प्रकट करते हैं।

(3) मसीही अपनी व्यक्तिगत आस्था का रचनात्मक रूप से बचाव कर सकते हैं (रोमियों 14:16)।

"जिस चीज़ को आप अच्छा मानते हैं उसे बुरा न बोलने दें"। जिसे मज़बूत मसीही अच्छा मानता है, वह जो खाता है और पीता है, या पुराने नियम के त्योहार के दिनों को कैसे देखता है, इस संबंध में उसकी स्वतंत्रता है। मज़बूत मसीही को यह महसूस करने की आवश्यकता नहीं है कि किसी विवादित मामले में उसकी स्वतंत्रता एक कमज़ोर मसीही के विवेक से आंकी जाती है, क्योंकि वह अपनी स्वतंत्रता के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता है (1 कुरिन्थियों 10:29-30)।

इसके बजाय, मज़बूत मसीही को वह करना चाहिए जो कुछ भी वह करता है और कमज़ोर मसीही को ऐसा कुछ करने से बचना चाहिए जिसका जिसका वह परमेश्वर की महिमा के प्रति समर्थन नहीं करता है (1 कुरिन्थियों 10:31)। मज़बूत मसीही उसका आनंद लेने के लिए स्वतंत्र है जो धन्यवाद के साथ प्राप्त करने के लिए परमेश्वर ने बनाया है। इस प्रकार मज़बूत मसीही को दोषी, अस्वीकृत या शर्मिंदा महसूस नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह कुछ विशेष आस्थाएँ रखता है, जिसे कि कमज़ोर मसीही अस्वीकार करते हैं। जब उसकी आस्थाओं पर कमज़ोर मसीहियों द्वारा आक्रमण किया जाता है या उन्हें अस्वीकृत कर दिया जाता है, तो मज़बूत मसीही रचनात्मक रूप से और प्रेम से अपनी आस्थाओं की रक्षा कर सकता है।

(4) मसीहियों को विवादित (विवादास्पद) मामलों के विषय में अपनी व्यक्तिगत आस्था को अपने और परमेश्वर के बीच रखना चाहिए (14:22)।

"आप इन चीजों के विषय में जो भी मानते हैं, उसे अपने और परमेश्वर के बीच रखें।" कमज़ोर मसीहियों की हानि के लिए विवादित मामलों के संबंध में मज़बूत मसीही अपने अधिकारों और स्वतंत्रता का प्रदर्शन या प्रतिवाद न करें! हालाँकि, मज़बूत मसीहियों को इस प्रकार की आस्था रखने का अधिकार है और वे अपनी आस्थाओं का आत्मसमर्पण न करें! यदि वे अपनी आस्थाओं का आत्मसमर्पण करेंगे, तो वे ऐसा विश्वास के बिना करेंगे, और यह "पाप" होगा (रोमियों 14:23)।

14:10-14

प्रश्न 2. **मसीहियों को विवादित (विवादास्पद) मामलों के विषय में दूसरों की व्यक्तिगत राय या आस्था को कैसे देखना चाहिए?**

ध्यान दें।

(1) मसीहियों को विवादित मामलों के संबंध में दूसरों की व्यक्तिगत राय, आस्था या विश्वास का न्याय नहीं करना चाहिए (रोमियों 14:10-12)।

सभी मसीही एक दिन परमेश्वर के न्याय के आसन के समक्ष खड़े होंगे और अपने जीवन का लेखा-जोखा परमेश्वर को देंगे। मसीही परमेश्वर को इसका कोई लेखा नहीं देंगे कि अन्य मसीही कैसे रहे हैं, परंतु उन्हें उसका लेखा देना होगा कि वे स्वयं कैसे रहे हैं! "परमेश्वर हर छिपी हुई वस्तु सहित हर काम को न्याय में लाएगा, भले वह अच्छा हो या बुरा।" और यीशु ने कहा," मैं तुम से कहता हूँ कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे" (मत्ती 12:36)।

इसलिए, मसीहियों को विवादित मामलों के क्षेत्र में अन्य मसीहियों की व्यक्तिगत आस्था या आचरण पर न्याय नहीं करना चाहिए या उसे कम नहीं समझना चाहिए। परमेश्वर ने मसीहियों को मसीही कलीसिया के बाहर लोगों का न्याय करने से मना किया है। यह परमेश्वर का विशेषाधिकार है (मत्ती 7:1-2; 1कुरिन्थियों 5:12-13)। परमेश्वर ने मसीहियों को अन्य मसीहियों का न्याय करने से भी मना किया है, सिवाय स्पष्ट पाप के मामले में (तुलना करें: मत्ती 18:15-17; 1 कुरिन्थियों 5:1-13; 1 तीमुथियुस 5:20)। मसीहियों को बल्कि अपने स्वयं के व्यवहार और प्रेमहीन आचरण को जाँचना चाहिए, जाँचना चाहिए कि क्या वे अपने स्वयं की आस्थाओं के अनुसार रहते हैं, और जाँचना चाहिए कि क्या वे अपनी अलग-अलग आस्थाओं के कारण दूसरों का न्याय करने से रुके हैं!

(2) मसीहियों को इस बात में अंतर करना चाहिए कि उद्देश्यपूर्ण रूप से क्या सत्य है और कुछ मसीही किसे आत्मगत रूप में सत्य मानते हैं (रोमियों 4:14)।

बाइबल में स्पष्ट रूप से जो आज्ञाएँ, निषेध या शिक्षाएँ दी गई हैं, वह *उद्देश्यपूर्ण रूप से सत्य* है। और जिसे सत्य माना जाता है, भले ही जब उसके विषय में बाइबल में कोई स्पष्ट शिक्षा नहीं दी गई है, वह *आत्मगत रूप में सत्य* है। बाइबल में दिया केवल उद्देश्यपूर्ण सत्य शिक्षा और जीवन का आधार है। अन्य लोगों का आत्मगत सत्य उन्हें प्रेम दिखाने का आधार है।

उदाहरण के लिए, यीशु ने स्पष्ट रूप से सिखाया कि सभी भोजन "शुद्ध" हैं (मरकुस 7:15,19)। और प्रेरित पौलुस ने यह भी सिखाया कि जो कुछ भी परमेश्वर ने बनाया है वह "अच्छा" है और कुछ भी "अस्वीकृत" नहीं किया जाना चाहिए यदि वह धन्यवाद के साथ प्राप्त होता है (1 तीमुथियुस 4:4-5; तुलना करें रोमियों 14:14,20)। प्रेरित पौलुस इस सच्चाई को मानता है कि सभी भोजन शुद्ध हैं और बाइबल में पढ़ाए गए उद्देश्यपूर्ण सत्य के रूप में खाए जा सकते हैं। यह उद्देश्यपूर्ण सत्य उसका व्यक्तिगत आत्मगत सत्य भी है।

हालाँकि, यद्यपि बाइबल में दी गई उद्देश्यपूर्ण शिक्षा का उद्देश्य सभी प्रकार के भोजन को "शुद्ध" मानना है, परन्तु ऐसे मसीही भी हैं जो आत्मगत आस्था रखते हैं कि कुछ भोजन "अशुद्ध" है। एक कमज़ोर मसीही इस उद्देश्यपूर्ण सत्य को जान सकता है कि सभी भोजन "शुद्ध" हैं, फिर भी आत्मगत रूप से विश्वास नहीं कर सकता कि सभी भोजन "शुद्ध" हैं। उदाहरण के लिए, उसे सूअर का मांस खाना असंभव लगता है। या वह शराब पीने के बिल्कुल विरोद्ध में है। जब मज़बूत मसीही कमज़ोर मसीहियों से संबंधित होते हैं, तो उन्हें केवल बाइबल में दिए गए उद्देश्यपूर्ण सत्य को ही नहीं, बल्कि कमज़ोर मसीही के आत्मगत सत्य, व्यक्तिगत आस्था को भी ध्यान में रखना चाहिए!

मूर्तियों के संबंध में भी स्थिति समान है (तुलना करें 1 कुरिन्थियों 8:4,7)। कई मसीही जानते हैं कि वास्तव में मूर्ति का कोई अस्तित्व नहीं है और कोई ईश्वर नहीं है परन्तु केवल बाइबल का जीवित परमेश्वर है। अन्य "देवी-देवता" का अस्तित्व केवल मानव निर्मित छवियों के रूप में या मानव मन द्वारा तैयार किए गए विचारों के रूप में है। हालाँकि, प्रत्येक मसीही को यह पता नहीं है या यह उसकी आस्था नहीं है! कुछ मसीही अभी भी मूर्तियों के इतने आदी हैं कि वे आत्मगत रूप से मूर्तियों को चढ़ाए गए खाद्य पदार्थों को "अशुद्ध" मानते हैं! इस प्रकार भेद बाइबल की शिक्षा और व्यक्तिगत आस्था के बीच है। भेद "वास्तव में उद्देश्यपूर्ण रूप से सच क्या है" और "आत्मगत रूप से किसे सच माना जाता है" के बीच है! मसीहियों को विवादित मामलों के विषय में बाइबल की शिक्षा को जानना चाहिए, परन्तु फिर भी अपनी स्वयं की आत्मगत भावनाओं और विचारों के साथ-साथ इन मामलों के विषय में अन्य मसीहियों की आत्मगत भावनाओं और विचारों को भी मानना चाहिए। केवल प्रेम, स्वीकृति और आपसी सम्मान के वातावरण में, मसीही अपने आत्मगत विचारों या आस्थाओं के क्षेत्र में एक दूसरे का निर्माण कर

सकते हैं।

1 कुरिन्थियों 8:4-13 कहता है, "अतः मूर्तियों के सामने बलि की हुई वस्तुओं वस्तुओं के खाने के विषय में हम जानते हैं कि मूर्ति जगत में कुछ भी नहीं, और एक को छोड़ और कोई परमेश्वर नहीं है। यद्धपि आकाश में और पृथ्वी पर बहुत से ईश्वर कहलाते हैं (जैसा कि सचमुच बहुत से ईश्वर और बहुत से प्रभु हैं) तौभी हमारे लिये तो एक ही परमेश्वर हैः अर्थात् पिता जिसकी ओर से सब वस्तुएँ आई हैं, और हम उसी के लिये जीते हैं। और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिसके द्वारा सब वस्तुएँ आई हैं, और हम उसी के लिये जीते हैं। पर सब को यह ज्ञान नहीं, कुछ लोग अभी भी मूर्तियों के इतने आदी हैं कि जब वे ऐसा खाना खाते हैं, तो वे सोचते हैं कि यह मूर्ति को चढ़ाया गया है, और चूंकि उनका विवेक कमज़ोर है, इसलिए वह अपवित्र हो गया है। परन्तु भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुँचाता। यदि हम न खाएँ तो हमारी कुछ हानि नहीं, और यदि खाएँ तो कुछ लाभ नहीं। परन्तु सावधान! ऐसा न हो कि तुम्हारी यह स्वतंत्रता कहीं निर्बलों के लिये ठोकर का कारण हो जाए। क्योंकि यदि कोई तुझ ज्ञानी को मूर्ति के मन्दिर में भोजन करते देखे और वह निर्बल जन हो, तो क्या उसके विवेक को मूर्ति के सामने बलि की हुई वस्तु खाने का साहस न हो जाएगा। इस रीति से तेरे ज्ञान के कारण वह निर्बल भाई जिसके लिये मसीह मरा, नष्ट हो जाएगा। इस प्रकार भाईयों के विरूद्ध अपराध करने से और उनके निर्बल विवेक को चोट पहुँचाने से, तुम मसीह के विरूद्ध अपराध करते हो। इस कारण यदि मेरा भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाए, तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊँगा, न हो कि मैं अपने भाई के लिये ठोकर का कारम बनूँ।"

14:15-20अ

प्रश्न 3. विवादित (विवादास्पद) मामलों के विषय में मसीहियों का क्या रवैया होना चाहिए?

ध्यान दें। "कमज़ोर" और "मज़बूत" वर्णनों द्वारा, किसी निंदा का आशय नहीं है, परन्तु केवल अंतर है। पौलुस उस विश्वास को "एक कमज़ोर विश्वास" कहता है जो लोगों को कुछ चीजों को करने के लिए मना करता है, क्योंकि इस प्रकार का विश्वास "मज़बूत विश्वास" वाले मसीहियों के आचरण से ठोकर और विनाश के लिए अतिसंवेदनशील है जो उन्हें ऐसी चीजें करने की अनुमति देता है।

(1) मसीहियों को अपने आचरण का निर्धारण अपने अधिकारों या अपनी स्वतंत्रता से नहीं, बल्कि प्रेम से करने देना चाहिए (रोमियों 14:13,15)।

सभी मसीहियों (चाहे मज़बूत या कमज़ोर हों) की उन मामलों में एक ही विश्वास या आस्था होनी चाहिए जिनकी बाइबल आज्ञा, निषेध या शिक्षा देती है। ये मामले "विवादित मामले" नहीं हैं! उन चीज़ों के विषय में जिनकी बाइबल स्पष्ट रूप से आज्ञा, निषिद्ध या शिक्षा देती है, किसी को भी अपनी राय रखने की अनुमति नहीं है! किसी को भी अपनी अधार्मिकता और दुष्टता से सच्चाई को दबाने या सच्चाई को मोड़ने का अधिकार नहीं है (रोमियों 1:18,25)।

मज़बूत मसीहियों को विवादित मामलों के विषय में राय या आस्थाएँ रखने का अधिकार और स्वतंत्रता है (इस प्रकार, ऐसे मामले जिनकी बाइबल आज्ञा, निषिद्ध या शिक्षा नहीं देती है)। हालाँकि, उनके पास उस अधिकार या स्वतंत्रता को व्यक्त करने या उस अधिकार या स्वतंत्रता को प्रयोग करने का कोई अधिकार नहीं है जब वह एक कमज़ोर मसीही के उसके विश्वास में ठोकर खाने का कारण बनता है। प्रेम की व्यवस्था अधिकारों और स्वतंत्रता की व्यवस्था से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है!

एक मज़बूत मसीही सार्वजनिक रूप से किसी विवादित मामले के विषय में अपनी राय या आस्था व्यक्त न करे जब वह कमज़ोर मसीही के उसके विश्वास में ठोकर का कारण बनता है। वह कमज़ोर मसीहियों की उपस्थिति में विवादित मामलों के क्षेत्र में अपने अधिकार या स्वतंत्रता का प्रयोग भी न करे। जब वह फिर भी उस अधिकार या स्वतंत्रता का दुरुपयोग करता है, तो वह अपने भाई को नष्ट कर देता है। इसलिए, जब भी कोई मसीही उपस्थित होता है, जो किसी विशेष मामले में कमज़ोर विश्वास रखता है, तो एक मज़बूत मसीही उस आस्था को न तो व्यक्त करे या न उसका उपयोग करे। मसीही समुदाय के भीतर व्यक्तिगत अधिकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता उतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि एक ऐसे ईसाई के प्रति प्रेम प्रदर्शित करना जो किसी विवादित मामले के संबंध में एक राय या आस्था रखता है।

(2) मसीहियों को अपने आचरण का निर्धारण उसके द्वारा होने देना चाहिए कि दूसरे व्यक्ति को क्या आत्मिक उन्नति देता है (रोमियों 14:13,15)।

मसीही एक दूसरे को नष्ट न करें (रोमियों 14:15)। वे दूसरे मसीही में परमेश्वर के कार्य को नष्ट न कर दें (रोमियों 14:20)। शब्द "नष्ट" (यूनानी: अपोलुमी) एक बहुत ही मज़बूत शब्द है (1 कुरिन्थियों 8:11)। हालाँकि, यहाँ यह मसीही विश्वास से हटने और अनंत विनाश का भी संदर्भ नहीं है।

सभी पाप विनाशकारी हैं। जब एक मज़बूत मसीही किसी कमज़ोर मसीही की राय, आस्था या विश्वास पर विचार किए बिना एक विवादित मामले के संबंध में अपने अधिकार और स्वतंत्रता का प्रयोग करता है, तो वह विनाशकारी रूप से कार्य कर रहा है, अर्थात वह भाई के विरुद्ध और परमेश्वर के विरुद्ध पाप करता है। मज़बूत मसीही का पाप यह है कि वह प्रेम की माँगों का उल्लंघन करता है और वह अपने भाई की धार्मिक भलाई के लिए चिंता करने में विफल रहता है। उसका प्रेमहीन आचरण ही वह कारण है कि कमज़ोर मसीही विवादित मामलों के विषय में अपने विश्वास में ठोकर खाता है। यही कारण है कि एक विवादित मामले के संबंध में कमज़ोर मसीही की राय या आस्था को नष्ट किया जा रहा है।

इसके अलावा जब कमज़ोर मसीही मज़बूत मसीही के आचरण से अपने धार्मिक विश्वास को पलटने की अनुमति देता है, तो वह स्वयं अपनी लिए विनाशकारी कदम उठाता है, यानी वह भी स्वयं के विरुद्ध और परमेश्वर के विरुद्ध पाप करता है। कमज़ोर मसीही का पाप यह है कि वह अपने व्यक्तिगत धार्मिक आस्था और अपने विवेक का उल्लंघन करता है। यदि कमज़ोर मसीही अपनी व्यक्तिगत आस्थाओं और विवेक का उल्लंघन करना जारी रखेगा, और यदि निष्ठा का यह उल्लंघन ठीक नहीं किया गया, तो यह उसके विश्वास और उसके व्यक्तित्व में गंभीर समस्याएँ पैदा कर सकता है। फिर भी, उसके मामले में भी, प्रभु उसे खड़ा करने में सक्षम है (रोमियों 14:4)।

मज़बूत मसीही को उस प्रभाव पर विचार करना चाहिए कि उसकी आस्थाएँ और आचरण कमज़ोर मसीहियों पर ला सकते हैं। न तो मज़बूत और न ही कमज़ोर मसीही मसीहियों की सुरक्षा की बाइबल की शिक्षाओं और मसीहियों की अंतिम दृढ़ता के पीछे शरण ले। कमज़ोर मसीही अभी भी परमेश्वर की कारीगरी हैं (इफिसियों 2:10) और परमेश्वर ने अभी तक उसे तैयार करने के कार्य को रोका नहीं है। इसलिए, मज़बूत मसीही अपने अधिकारों और सवतंत्रता के प्रदर्शन से कमज़ोर मसीहियों के विश्वास और आस्थाओं को न तोड़ें।

(3) मसीहियों की जिम्मेदारी, अपने अधिकारों और स्वतंत्रता को बढ़ावा देना नहीं, बल्कि परमेश्वर के राज्य को बढ़ावा देना है (रोमियों 14:17-19)।

जब मज़बूत मसीही के अधिकार और स्वतंत्रता कमज़ोर मसीही के लिए क्षति का कारण बन जाते हैं, तो उसके अधिकार और स्वतंत्रता में बाधा आती है। परमेश्वर के राज्य में विवादित मामलों पर मज़बूत राय या आस्था रखना ज़रूरी नहीं है, बल्कि "प्रेम" (यूहन्ना 13:34-35) और "पवित्र आत्मा में धार्मिकता, शांति और आनंद" को बढ़ावा देना है (रोमियों 14:17)। परमेश्वर का राज्य वह क्षेत्र है, जिसके सभी (मज़बूत और कमज़ोर) मसीही हैं, जिस क्षेत्र में परमेश्वर के प्रभुत्व शासन को मान्यता प्राप्त है और उसकी इच्छा सर्वोच्च है! यह वह संसार है जिसका मसीही है।

जब खाने-पीने के प्रश्न प्रमुख चिंता का विषय बन जाते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि लोगों के विचार और व्यवहार परमेश्वर के राज्य की रूचियों से कितने भटक गए हैं। परमेश्वर के राज्य में मसीही की जिम्मेदारी वही करना है जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक है, व्यक्तिगत संबंधों में शांति को बढ़ावा देना है, केवल वही करना है जो दूसरों की आत्मिक उन्नति करता है, ताकि सभी को आनंद का अनुभव हो सके। केवल इन चीजों को करने से, मसीही मसीह की सेवा करते हैं, परमेश्वर को अच्छी रीति से प्रसन्न करते हैं और अन्य लोगों द्वारा अनुमोदित होते हैं, विशेषकर गैर-मसीहियों द्वारा (रोमियों 14:18-19)। मज़बूत मसीहियों की ओर से अविवेकी आचरण के गैर-मसीहियों द्वारा जबरदस्त अनुमान और विचारधाराएँ होती हैं। मसीहियों को मसीही कलीसिया के प्रति शत्रु को तिरस्कारपूर्ण रीति से बोलने का अवसर नहीं देना चाहिए। परमेश्वर की दृष्टि में सही करना और रिश्तों में सामंजस्य बिठाना दो चीजें हैं जिन्हें कलीसिया की संगती में मसीहियों के रवैये और आचरण को नियंत्रित करना चाहिए।

14:20ख-23

***प्रश्न 4*. विवादित (विवादास्पद) मामलों के संबंध में किसी की आस्थाओं और पाप का क्या संबंध है?**

ध्यान दें। मज़बूत और कमज़ोर मसीही दोनों के पास विवादित मामलों के विषय में राय, आस्थाएँ या विश्वास हैं। हालाँकि, जब कोई व्यक्ति उनके अनुसार नहीं जीता है, तो वह पाप करता है।

(1) मसीही अपनी व्यक्तिगत आस्थाओं के विरुद्ध कुछ भी न करे।

रोमियों 14:20 का शाब्दिक रूप से कहता है, "यह एक आदमी के लिए गलत है, जो खाता है (जो वह खाता है उसके द्वारा) (स्वयं को या दूसरे को) ठोकर मारता है (यूनानी: प्रोस्कोम्मा)।" कुछ अनुवादकों के अनुसार संदर्भ एक कमज़ोर मसीही के लिए है जो अपने विवेक के विरुद्ध खाता और पीता है। उसके व्यवहार से पता चलता है कि वह अपनी आस्था के साथ काम नहीं कर रहा है। वह पाप करता है, क्योंकि "वह संदेह करता है जब वह खाता है।" वह दोषी है क्योंकि वह विश्वास में कार्य नहीं करता है। "और जो कुछ भी विश्वास से नहीं आता है वह पाप है "(रोमियों 14:23)। दूसरों के अनुसार, संदर्भ एक मज़बूत मसीही के लिए है जो अपने खाने और पीने से कमज़ोर मसीही के प्रति अपराध करता है (वह उसे उसकी आस्थाओं में ठोकर खाने के लिए प्रेरित करता है)। मज़बूत मसीही के व्यवहार से संदेह की पीड़ा आती है। दोनों अनुवाद संभव हैं, परन्तु अंतिम बेहतर है। कमज़ोर मसीही तब ठोकर खाता है जब वह अपनी व्यग्तिगत आस्था के विरुद्ध खाता है, अर्थात, जब वह स्पष्ट विवेक के बिना और विश्वास के बिना खाता है (रोमियों 14:14,23)।

इसलिए, रोमियों 14:21 में, मज़बूत मसीही कुछ भी ऐसा न करने के लिए उकसाया जाता है, जिससे अंततः कमज़ोर मसीही ठोकर खाए। यह कहता है, भला तो यह है कि तू न मांस खाए (जो पहले मूर्तियों को चढ़ाया गया हो और बाद में बाज़ार में बीके) और न दाखरस पीए (जो पहले मूर्तियों को चढ़ाई गई हो और बाद में बाजार में बीके), और न कुछ ऐसा करे जिससे

तेरा भाई ठोकर खाए (यूनानी: प्रोस्कोप्टो)। विश्वास में कमज़ोर लोगों को आश्वस्त किया गया था कि वह पीना और खाना जो मूर्तियों को चढ़ाया गया था, "प्रदूषित" था (रोमियों 14:14)।

इस संबंध में यीशु मसीह के शब्दों को स्मरण रखना अच्छा है, "एक व्यक्ति के बाहर का कुछ भी उसके अंदर जाने से उसे" अशुद्ध "नहीं बना सकता है। इसके बजाय, वह जो एक व्यक्ति से बाहर आता है, वह उसे 'अशुद्ध' बनाता है" (मरकुस 7:15-23)।

(2) मसीहियों को विश्वास से सभी चीजें करनी चाहिए, अर्थात, अपनी व्यक्तिगत आस्था के अनुसार। मज़बूत मसीहियों को अपनी स्वतंत्रता के विषय में मज़बूत राय या आस्था रखने और विवादित मामलों में अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करने का अधिकार है (रोमियों 14:22)। हालाँकि, वे अपनी व्यक्तिगत आस्थाओं का आत्मसमर्पण न करें, क्योंकि यदि वे ऐसा करते हैं, तो वे विश्वास के बिना कार्य करेंगे (रोमियों 14:23)। वे कमज़ोर मसीहियों की हानि के लिए अपने अधिकारों और स्वतंत्रता का प्रदर्शन या प्रतिवाद भी न करें। इसके बजाय, उन्हें विवादित मामलों के विषय में अपनी राय और आस्था को अपने और परमेश्वर के बीच रखना चाहिए (रोमियों 14:22)।

कमज़ोर मसीहियों को उन्हीं विवादित मामलों के विषय में अलग-अलग राय या आस्था रखने और उससे बचने का अधिकार है जो मज़बूत मसीही करते हैं (रोमियों 14:22)। हालाँकि, वे भी अपनी व्यक्तिगत आस्थाओं का आत्मसमर्पण न करें, क्योंकि यदि वे ऐसा करते हैं, तो वे भी विश्वास के बिना कार्य करेंगे (रोमियों 14:23)। वे कुछ भी ऐसा न करें जिसके विषय में उन्हें संदेह है या जिसके विषय में उनका विवेक उनकी निंदा करता है। हालाँकि कमज़ोर मसीही अपनी आस्था को ख़राब करने के लिए मज़बूत मसीहियों के उदाहरण से परीक्षा में पड़ सकते हैं, परन्तु वे इस बात के जिम्मेदार रहते हैं कि उनके सभी कार्य उनकी व्यक्तिगत आस्था से होते हैं। रोमियों 14:23 कहता है, "परन्तु जो सन्देह कर के खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर चुका, क्योंकि वह निश्चय धारणा से नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है।" जब एक कमज़ोर मसीही फिर भी अपने विवेक का उल्लंघन करता है और कुछ ऐसा करता है जो उसे यकीन दिलाता है कि उसे नहीं करना चाहिए, वह विश्वास के बिना काम कर रहा होता है। बिना विश्वास के कुछ भी करना पाप है।

इसीलिए, मज़बूत और कमज़ोर मसीही दोनों को केवल उन चीजों को करना चाहिए जिसे वे आत्मगत रूप से (व्यक्तिगत) मानते हैं कि सही है। यह केवल विश्वास है जिससे कि मसीही दृढ़ खड़े रहते हैं।

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 14:1-23 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें।

(स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 14:1-23 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

14:1,3. मज़बूत मसीही को निर्णय पारित किए बिना विवादित मामलों में कमज़ोर मसीही के संदेह, राय, आस्था या विश्वास को स्वीकार करना चाहिए और उसे या उसके संदेह को नीची दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।

14:3. कमज़ोर मसीही को विवादित मामलों के विषय में विभिन्न राय, आस्था या विश्वास रखने के लिए मज़बूत मसीही की निंदा नहीं करनी चाहिए।

14:5,23. कमज़ोर और मज़बूत दोनों मसीहियों को इस बात पर पूरी रीति से आश्वस्त होना चाहिए कि वे आत्मगत रूप में विवादित मामलों के विषय में स्वयं के लिए क्या सही और ठीक मानते हैं। उन्हें किसी भी क्षेत्र में केवल तभी कार्य करना चाहिए जब वे मानते हों कि वह उनके लिए ठीक और सही है!

14:6-9. एक मसीही जो भी विवादित मामलों के क्षेत्र में करता है, उसे प्रभु के प्रति करना चाहिए और प्रभु को धन्यवाद देना चाहिए।

14:10-12. मसीहियों को इस प्रकार से जीना चाहिए जिससे पता चले कि वे पूरी रीति से जानते हैं कि उन्हें परमेश्वर के न्याय के आसन के सामने अपने व्यक्तिगत जीवन का लेखा देना होगा।

14:13,20. मज़बूत मसीहियों को इस बात को लेकर अपना दिमाग तैयार करना चाहिए कि वे कमज़ोर मसीही के रास्ते में कभी कोई ठोकर या बाधा न डालें और न ही कभी उनमें परमेश्वर के कार्य को नष्ट करें।

14:14. यद्यपि सभी भोजन अपने आप में शुद्ध हैं, परन्तु एक कमज़ोर मसीही को केवल वही खाना चाहिए जिसे वह मानता है कि वह उसके लिए शुद्ध है।

14:15,21. एक मज़बूत मसीही को मांस खाने या शराब पीने से बचना चाहिए जब भी वह किसी भी कमज़ोर उपस्थित मसीही को परेशान करता है।

14:15. मज़बूत मसीहियों के आचरण का निर्धारण उनके अधिकारों और स्वतंत्रता से नहीं, बल्कि परमेश्वर, उनके पड़ोसी और स्वयं के प्रति उनके प्रेम से होना चाहिए।

14:16,22. मज़बूत मसीहियों को उन विवादित मामलों की बुराई करने की अनुमति कमज़ोर मसीहियों को नहीं देनी चाहिए जिन्हें वे अच्छा मानते हैं। उन्हें स्वयं को दोषी भी नहीं मानना चाहिए कि वे ऐसी राय, आस्था या विश्वास रखते हैं।

14:17,19. मसीहियों का आचरण परमेश्वर के शासन से निर्धारित होता है, जिसके लिए उन्हें वही करना पड़ता है जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक होता है, अलग-अलग राय रखने वाले लोगों के साथ शांति से रहना पड़ता है और एक दूसरे की बढ़ौतरी करनी होती है।

14:22. मज़बूत और कमज़ोर मसीहियों को विवादित मामलों के विषय में अपनी राय या विश्वास को अपने और परमेश्वर के बीच रखना चाहिए।

2. रोमियों 14:1-23 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं इस बात का अधिक ध्यान रखना चाहता हूँ कि मैं विवादित मामलों के क्षेत्र में अन्य मसीहियों की राय की आलोचना, न्याय, निंदा न करूँ या उन्हें कम न समझूँ।

मैं और अधिक सावधान रहना चाहता हूँ कि ऐसा कुछ न कहूँ या करूँ जिससे दूसरे मसीही को उसके मसीही विश्वास में ठोकर लगे।

चरण 5. प्रार्थना।	प्रतिउत्तर
आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 14:1-23 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)	

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिये प्रार्थना**

दो या तीन समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिये और संसार भर के लोगों के लिये प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिये**

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 14:1-23 में से प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन यहेजकेल **दानिय्येल 2, 3, 4, 6** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ
4. स्मरण करना। **(18) रोमियों 13:8.** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 25:1-13 में पाए जाने वाले "**दस कुंवारियों**" **के दृष्टान्त** की तैयारी करें। दृष्टान्तों की व्याख्या करने के लिये उन छः निर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3
7. परमेश्वर के राज्य के विषय पर प्रचार करने हेतु अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। अपने शांत समय के नोट्स, अपने स्मरणीय नोट्स, अपने बाइबल के अध्ययन के नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।